ॐ श्री कृष्ण शरणं मम ॐ

卐 ज्ञान विज्ञानयोग नामक सातवा अध्याय 卐

ठाकुर भिम सिंह द्वारा प्रस्तुत

श्रीमद्भगवद्गीता अमृत

श्लोकों के गूढ़ रहस्यों के साथ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ज्ञानविज्ञानयोग- नामक सातवाँ अध्याय

01-07	विज्ञान सहित ज्ञान का विषय
08-12	संपूर्ण पदार्थों में कारण रूप से भगवान की व्यापकता का कथन
13-19	आसुरी स्वभाव वालों की निंदा और भगवद्भक्तों की प्रशंसा
20-23	अन्य देवताओं की उपासना का विषय
24-30	भगवान के प्रभाव और स्वरूप को न जानने वालों की निंदा और जानने वालों की महिमा ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १ - **मय्यासक्तमनाः पार्थ, योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।**
असंशयं समग्रं मां, यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥

श्रीभगवान् बोले - हे पार्थ! अनन्य प्रेम से मुझ में आसक्तचित तथा अनन्यभाव से मेरे परायण होकर योग में लगा हुआ तू जिस प्रकार से मेरे सम्पूर्ण विभूति, बल, ऐश्वर्यादि गुणों से युक्त, सब के आत्मरूप मुझ को संशयरहित जानेगा, उसको सुन ।

The Supreme Lord said: Now listen, O Partha (Arjun), how, with your mind attached exclusively to me, surrendering, and taking refuge in me through the practice of ***bhakti yog***, you will without any doubt, know me completely.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २ - **ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं, वक्ष्याम्यशेषतः**
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमशिष्यते ॥

मैं तेरे लिये इस विज्ञान सहित तत्वज्ञान को सम्पूर्णतया कहूँगा, जिस को जान कर संसार मे फिर और कुछ भी जानने योग शेष नहीं रह जाता ।

I shall now reveal to you fully this knowledge (Adhyatam - Spiritual Gyan) and wisdom, knowing which nothing else remains to be known in this world.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३ - **मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।**
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥

हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझ को तत्व से अर्थात् यथार्थ रूप से जानता है ।

यहीं मुख्य करण है कि मृत्युलोक में इतनी बड़ी संख्या में दुखित प्रानी पाये जाते हैं । सभी अपने मन की आकांशा और इच्छाओं की पूर्ती हेतु नाना प्रकार के यज्ञ, पूजापाठ और साधना करते हैं, परन्तु निशकामता के अभाव में यह सब मुक्ति या भक्ति नहीं **प्रदान कर सकते । अन्यथा मृत्युलोक के समान सुन्दर और भक्ति करने का स्थान और कोई दूसरा है ही नहीं ।**

Amongst thousands of persons, hardly one strives for perfection; and amongst those who have achieved perfection, hardly or scarcely one knows me in essence or in truth. That is in amongst one million, only one can or strives from all possible means to know me properly.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ४ - **भूमिरापोऽनलो वायुः, खं मनो बुद्धिरेव च ।**
अहङ्कार इतीयं मे, भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥

पृथवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार भी - इस प्रकार से यह आठ प्रकार से विभाजित मेरी प्रकृति है ।

Earth, water, fire, air, space, mind, intellect, and ego—these are eight components of my material energy or my Nature (Prakriti).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ५ - **अपरेयमितस्त्वन्यां, प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।**
जीव भूतां महाबाहो, ययेदं धार्यते जगत् ॥

यह आठ प्रकार के भेदों वाली तो अपरा अर्थात् मेरी जड़ प्रकृति है और हे महाबाहों ! इस से दूसरी को, जिस से यह सम्पूर्ण जगत् धारण किया जाता है, मेरी जीवरूपा परा अर्थात् चेतन प्रकृति जान ।

विशेष बात - भगवान् प्रकृति को लेकर अपनी रचना करते हैं । उसका नाम 'अपरा' प्रकृति है, और अपना अंश जो जीव है, उस को भगवान 'परा' प्रकृति कहते हैं । अपरा प्रकृति **निकृष्ट** , **जड़** और **परिवर्तनशील** है, तथा परा प्रकृति **श्रेष्ठ**, चेतन और

परिवर्तनरहित है ।

Such is my inferior energy or my lower (Insentient) nature. But beyond it, O mighty-armed Arjun, I have a superior energy or higher (sentient) nature. This is the ***jīva śhakti*** (the soul energy, the life-element), which comprises the embodied souls who are the basis of life in this world. The lower nature **is inferior, insentient (unconscious)** and **changeful**, while higher nature is **superior**, **sentient (conscious)** and **changeless**.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्यु् उपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस् तथा ॥६॥

तुम ऐसा समझो कि इन दोनों शक्तियों —— प्रकृति और पुरुष —— के संयोग से ही समस्त प्राणी उत्पन्न होते हैं; तथा मैं, परब्रह्म परमात्मा, ही सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति और प्रलय का स्रोत **(कारण)** हूं. (१३.२६ भी देखें) (७.०६)

BG 7.6: Know that all living beings are manifested by these two energies of Mine. I am the source of the entire creation, and into Me it again dissolves.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ७ -

मत्तः परतरं नान्यत्, किञ्चिदस्ति धनञ्जय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं, सूत्रे मणिगणा इव ॥

हे धनञ्जय! मुझ से भिन्न दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है । यह सम्पूर्ण जगत् सूत्र में सूत्र के मणियों के सदृश मुझ में गुँथा हुआ है ।

There is nothing higher than me, O Arjun. Everything rests in me, as beads strung on a thread.

वशेष बात - जैसे वायु आकाश से उत्पन्न होती है, आकाश में ही रहती है और आकाश में ही लीन होती है, ऐसे ही संसार भगवान् से उत्पन्न होता है, भगवान् में स्थित रहता है और भगवान् में ही लीन हो जाता है ।

Important Point - As air is born of ether (upper regions beyond the clouds (Vyom), resides in ether and merges in ether without having any independent existence of its own, so is the universe born of the Supreme Lord (Krishna), remains established in Him and merges in Him i.e., the universe has no

independent existence of its own besides the Supreme Lord Krishna.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

छठे से सातवे श्लोक में भगवान् ने अपने को सम्पूर्ण जगत का कारण बताया है । इसलिये अब भगवान् आठवे श्लोक से बारहवे श्लोक तक 'कारण-रूप से अपनी विभूतियों का वर्णन करते हैं -

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ८ - **रसोऽहमप्सु कौन्तेय, प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।**
प्रणवः सर्ववेदेषु, शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥

हे कुन्तीनन्दन, जलों में रस मैं हूँ, चन्द्रमा और सूर्य में प्रभा (प्रकाश) मैं हूँ, सम्पूर्ण वेदों में प्रणव (ओंकार-ॐ), आकाश में शब्द और मनुष्यों में पुरुषार्थ मैं ही हूँ ।

I am the taste in water, O son of Kunti, and the radiance of the sun and the moon. I am the sacred syllable Om in the Vedic mantras; I am the sound in ether, and the ability in human beings.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ९ - **पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च, तेजश्चास्मि विभावसौ ।**
जीवनं सर्वभूतेषू, तपश्चास्मि तपस्विषु ॥

पृथ्वी में पवित्र गन्ध मैं हूँ, और अग्नि में तेज मैं हूँ, तथा सम्पूर्ण प्राणियों में जीवनी शक्ति मैं हूँ और तपस्यिों में तपस्या मैं हूँ ।

I am the pure fragrance of the Earth, and the brilliance in fire. I am the life-force in all beings, and the penance of the ascetics.

वशेष बात - "तप क्या है - परमात्म तत्व की प्राप्ति के लिये कितने ही कष्ट आयें , उनमें निर्विकार रहना ही असली तप है" । यहाँ विकार हैं - जैसे दुख, तकलीफ आदि । (तीन प्रकार के तप -अध्याय १७ श्लोक १४-१६ में भी देखिये) ।

Important Point - "What is Tapp –Tapp is that in which a striver remains uniform (unchanged), unaffected in difficulties, which he has to face, in realising GOD." Also refer to Chapter 17 verses 14 to 16 regarding 'Tap'.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १० - **बीजं मां सर्वभूतानां, विद्धि पार्थ सनातनम् ।**
बुद्धिर्बुद्धि मतामस्मि, तेजस्तेजस्वि नामहम् ॥

हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतों का सनातन बीज मुझको ही जान । मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ ।

O Arjun, know that I am the eternal (Sanatan) seed of all beings. I am the intellect of the intelligent, and the glory (splendour) of the glorious.

वशेष बात - "तेज दैवी सम्पदा का एक मुख्य गुण है (अध्याये १६ श्लोक ३). तत्त्वज जीवनमुक्त महा पुरुषों में एक विषेश तेज-शक्ति रहती है जिस के प्रभाव से दुर्गुन-दुराचारी मनुष्य भी सद्गुण-सदाचारी बन जाते हैं ।

Important Point - "Tej – exceptional quality in liberated souls - "Liberated souls, possess a special aura, which enables even dissolute and immoral persons, to become virtuous" if they come in contact with them.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ११ - **बलं बलवतां चाहं, कामराग विवर्जितम ।**
धर्मा विरुद्धो भूतेषु, कामो ऽस्मि भरतर्षभ ॥

हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानो का आसक्ति और कामनाओं से रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतों में धर्म के अनुकूल अर्थात् शास्त्र के अनुकूल काम हूँ ।

O best of the Bharatas, in strong persons, I am their strength devoid of desire and passion. I am mating activity not conflicting with virtue or scriptural injunctions.

वशेष बात - "मनुष्यों में धर्म से अविरुद्ध अर्थात् धर्मयुक्त काम मेरा स्वरूप है । कारण कि शास्त्र और लोक मरर्यादा के अनुसार शुभभाव से केवल संनतान उत्पति के लिये जो काम होता है, वह काम मनुष्य के अधीन होता है"।

Important Point - "Desire free from attachment and pleasure, is laudable because it helps in producing offsprings and it remains under control of human. But desire possessed of attachment and pleasure, misguides a human, enables him/her to perform actions against dictates of scriptures and leads them to afflictions, sins, and degradation.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास् तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान् विद्धि न त्व् अहं तेषु ते मयि ॥१२॥

जो भी सात्त्विक, राजसिक तथा तामसिक गुण हैं, उन सबको तुम मुझसे ही उत्पन्न हुआ जानो. (अत:) वे (गुण) मुझपर निर्भर करते हैं, परन्तु मैं उनके आश्रित या उनसे प्रभावित नहीं होता हूं. (६.०४, ६.०५ भी देखें) (७.१२)।

BG 7.12: The three states of material existence—goodness, passion, and ignorance—are manifested by My energy. They are in Me, but I am beyond them.

यहाँ ज्ञिगयासू भक्त प्रश्न करते हैं कि जब परमात्मा मनुष्य शरीर को सब से उत्तम बनायें हैं तो फिर राजसिक और तामसिक गुण क्यों उत्पन्न कियें ? । इस पर विज्ञानियों ने प्रकाश डाला कि इस मृत्युलोक में मनुष्य के अलावे ८,०००,००० और आदि योनियाँ हैं जो सिर्फ भोगने के लिये पैदा होते हैं। वै कर्म योनि नहीं हैं और उन के पास श्रेष्ट बुद्दि अर्थात सोचने और समझने की क्षमता भी नहीं है। पर मनुष्य को सब योनियों से श्रेष्ट बना कर परमात्मा ने उन्हें वह तन, मन और बुद्दि प्रदान की है जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है। यही एक तन है जिस से भक्ति की प्राप्ति होती है। और कोई योनियों में कोई संस्कार नहीं होते हैं। १६ संस्कार केवल मानव के लिये ही निर्धारित किये गयें है। इसलिये मानव को सर्वश्रेष्ट योनि माना गया है। दूसरी ओर मानव के पास वेद, शास्त्र और बहुत से सदग्रंथ है जो उन्हें गलत मार्ग में जाने से रोक सके कि अगर मनुष्य सर्वश्रेष्ट योनि पाने के बाद भी सर्वश्रेष्टता से बिमुख होता हो तो वे उन का मर्ग दर्शण करने में सहायक होवें।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

त्रिभिर् गुणमयैर् भावैर् एभिः सर्वम् इदं जगत् ।
मोहितं नाभिजानाति माम् एभ्यः परम् अव्ययम् ॥१३॥

प्रकृति के इन तीनों गुणों के कार्यों से यह सारा संसार भ्रमित रहता है, अतः मनुष्य इन गुणों से परे मुझ अविनाशी परमात्मा को जानने की कोशिश नहीं करता है. (७.१३)

BG 7.13: Deluded by the three modes of Maya, people in this world are unable to know Me, the imperishable and eternal.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १४ - **दैवी ह्येषा गुणमयी, मम माया दुरत्यया ।**
मामेव ये प्रपधन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी **दुस्तर** है। परन्तु जो पुरुष केवल मुझ को ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया को उल्लंघन कर जाते हैं

अर्थात् संसार से तर जाते हैं ।

My divine energy Maya, consisting of the three gunas (modes of nature i.e., Sattva, Raj & Tam), is very difficult to overcome. But those who surrender unto me (as I am free from these three gunas) cross over it easily.

वशेष बात - दुरत्यया - सत्व, रज और तम - इन तीन गुणोंवाली दैवी (अर्थात् परमात्मा की माया बड़ी ही दुरत्यय है । भोग और संग्रहकी इच्छा रखनेवाले मनुष्य इस माया से सम्बन्ध विच्छेद नहीं कर सकते ।
'दुरत्यय' कहने का तात्पर्य है कि यह मनुष्य अपने को कभी सुखी तो कभी दुखी, कभी समझदार तो कभी बेसमाझ, कभी निर्बल तो कभी बलवान आदि मान कर इन भावों में तल्लीन रहते हैं । इस तरह आने-जानेवाले प्राकृत भावों और पदार्थों में तादात्म्य, ममता, कामना करके उनसे बँधे रहते हैं और अपने को इन से रहित अनुभव नहीं कर सकते । यही इस माया में दुरत्ययपन है ।

Important Point - The Divine illusion of the Lord, consisting of the three modes of nature – Sattva, Raj, and Tam, is extremely difficult to surmount. People, because of the desire of Pleasures and prosperity, cannot be free from this illusion. Because of their attachment for the world, including the body and its pleasure and pain etc., they get entangled in them. This Divine illusion is hard to surmount when they accept the independent existence of the modes of Nature. If they do not accept their separate entity, besides God, they will overcome this Divine illusion.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १५ - **न मां दुष्कृतिनो मूढाः, प्रपधन्ते नराधमाः ।**
माययापहृतज्ञाना, आसुरं भाव माश्रिताः ॥

माया के द्वारा जिन का ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर-स्वभाव को धारण किये हुए, मनुषयों में नीच, दूषित कर्म करनेवाले मूढ़ लोग मुझ को नहीं भजते ।

Four kinds of human beings do not surrender unto me—those ignorant of knowledge, those who lazily follow their lower nature though capable of knowing me, those with deluded intellect, and those with a demoniac nature.

वशेष बात - "नराधमाः - कहने का मतलब है कि वे दुष्कृती और मूढ़ मनुष्य पशुओं से भी नीचे हैं । पशु तो फिर भी अपनी मर्यादा में रहते हैं, पर ये मनुष्य होकर भी अपनी मर्यादा का उल्ल्घंन कर जाते हें । पशु तो अपनी योनि भोग कर मनुष्य योनि की तरफ आ रहे हैं और ये मनुष्य होकर (जिन को परमात्मा की

प्राप्ति करने के लिये मनुष्य शरीर मिला है) पाप, अन्याय आदि कर के नरकों और नीच योनियों के तरफ जा रहे हैं ।

Important Point - Naradham – Those evil-doers and deluded ones, are the lowest amongst humans. They are lower than even animals, because animals follow rules of nature, while they do not. Moreover, animals while suffering the fruits of their previous actions, move higher towards human life, whereas human-beings by having this body (bestowed upon them for God realisation) by doing sins and injustice, follow the path which leads them to hell and lower lives. Lord Krishna has declared that such people (Gita 16/19-20) "I repeatedly throw those evil, cruel, haters and vilest among human into demoniacal wombs. Thus, cast they sink into, still lower depths."

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १६ - **चतुर्विधा भजन्ते मां, जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।**
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी, ज्ञानी च भरतर्षभ ॥

हे भरतवंशियों मे श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्म करनेवाले आर्त, अर्थाथी, जिज्ञासु और ज्ञानी - ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझ को भजते हैं ।

O best amongst the Bharatas, four kinds of pious (virtuous, devout, holy, and religious) people engage in my devotion—the distressed, the seekers of worldly or materialistic possessions, the seekers after spiritual or Adhyatmic knowledge, and those who are situated in divine knowledge (i.e., Gyani).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १७ - **तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त, एक भक्तिर्विशिष्यते ।**
प्रियो हि ज्ञनीनोऽत्यर्थ, महं स च मम प्रियः ॥

उन में नित्य मुझ में एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेमभक्ति वाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम है, क्योंकि मुझ को तत्त्व से जाननेवाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिये हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिये है ।

Amongst these, I consider them to be the highest, who worship me with knowledge, and are steadfastly and exclusively devoted to me. I am very dear to them, and they are dear to me.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १८ - **उदारा सर्वएवैते, ज्ञानी त्वात्मैव मेमतम् ।**
आस्थितः स हि युक्तात्मा, मामेवानुत्त्मांगतिम् ॥

यह सभी उदार हैं परन्तु ज्ञानी तो साक्षात् मेरा स्वरूप ही है - ऐसा मेरा मत है । क्योंकि वह मद्‌गत मन-बुद्धिवाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम गतिस्वरूप मुझ में ही अच्छी प्रकार स्थित है ।

Indeed, all those who are devoted to me are noble. But those in spiritual and divine knowledge, who are of steadfast mind, whose intellect is merged in me, and who have made me alone as their supreme goal, I consider them as my very "Self."

वशेष बात - ज्ञानी के विषय में पूरी जानकी को प्राप्त करने के लिये तेरहवे अध्याये के श्लोक ७ से ११ तक देखिये । यहाँ आप को ज्ञानी के होने के २० लक्षन (गुण) देखने को मिलेगें । **गीता साधकसंजीवनि-स्वामी रामसुखदास महाराज जी ।**

Important Point - To have a better understanding of what Gyani means or is all about, please study Shloks 7 to 11 in chapter 13. There you will see the 20 special qualities of a Gyani or a person with divine knowledge and qualities. I will recommend that you read **Sadhak Sanjiwini by Swami Ram Sukhdas Maharaj Ji**.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १९ - **बहूनां जन्मनामन्ते, ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।**
वासुदेवः सर्वमिति स, महात्मा सुदुर्लभः ॥

बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में तत्त्वज्ञान को प्राप्त पुरुष (इन्सान) सबकुछ वासुदेव ही है - इस प्रकार मुझ को भजता है, वह महात्मा अत्यन्त दुर्लभ है ।

After many births of spiritual practice, one who is endowed with knowledge, surrenders unto me, knowing me to be all that is. Such a great soul is indeed. very rare.

वशेष बात - मनुष्य जनम सम्पूर्ण जनमों का अन्तिम जनम माना जाता है । भगवान् ने जीव को मनुष्य शरीर देकर उसे जनम-मरण के प्रवाह से अलग होकर अपने प्राप्ति का पूरा अधिकार दिया है । संतो की वाणी में और शास्त्रों में आता है कि मनुष्य जनम केवल अपना कल्याण करने के लिये ही मिला है, विष्यों का सुख भोगने के लिये तथा स्वॅग की प्राप्ति के लिये नहीं । इसलिये गीता ने स्वॅग की प्राप्ति चाहनेवालों को मूढ़ और तुच्छ बुद्धि वाले कहा है (२ -४२ ओर ७-२३)

Important Point - This human birth is the last of all births. God has given. human full right to be free from the cycle of birth and death. But human because of their attachment for the world, failing to attain Him, returns to the path of the mortal world (Gita 9/3). It is mentioned in the scriptures and in the utterance of the saints, that the only aim of Human life is to attain salvation. It is not for enjoying the pleasures of the world and heaven. Therefore, in the Gita such people who look upon heaven as a supreme goal are called unwise (2/42) and of meagre intelligence (of lowest level of intellect) (7/23).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कामैस् तैस्तैर् हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियमम् आस्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥२०॥

भोगों की कामना द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, ऐसे मनुष्य अपने स्वभाव से प्रेरित होकर नियमपूर्वक देवताओं की पूजा करते हैं. (७.२०)

BG 7.20: Those whose knowledge has been carried away by material desires surrender to the celestial gods. Following their own nature, they worship the *devatās*, practicing rituals meant to propitiate these celestial personalities.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुम् इच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां ताम् एव विदधाम्य् अहम् ॥२१॥
स तया श्रद्धया युक्तस् तस्याराधनम् ईहते ।
लभते च ततः कामान् मयैव विहितान् हि तान् ॥२२॥

जो कोई सकाम भक्त जिस किसी भी देवता को श्रद्धापूर्वक पूजना चाहता है, मैं उस भक्त की श्रद्धा को उसी देवता के प्रति स्थिर कर देता हूं. उस स्थिर श्रद्धा से युक्त वह मनुष्य अपने इष्ट देव की पूजा करता है और उस देवता के द्वारा इच्छित भोगों को निस्सन्देह प्राप्त करता है. वास्तव में वे इष्टफल मेरे द्वारा ही दिये जाते हैं. (७.२१-२२)

BG 7.21: Whatever celestial form a devotee seeks to worship with faith, I steady the faith of such a devotee in that form.
BG 7.22: Endowed with faith, the devotee worships a particular celestial god and obtains the objects of desire. But in reality, I alone arrange these benefits.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अन्तवत् तु फलं तेषां तद् भवत्य् अल्पमेधसाम् ।
देवान् देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति माम् अपि ॥२३॥

परन्तु उन अल्पबुद्धि वाले मनुष्यों को देवताओं का दिया हुआ फल नाशवान होता है. देवताओं को पूजने वाले देवलोक को प्राप्त करते हैं तथा मेरे भक्त (परमधाम में आकर) मुझे ही प्राप्त करते हैं. (७.२३).

BG 7.23: But the fruit gained by these people of little understanding is perishable. Those who worship the celestial gods go to the celestial abodes, while My devotees come to Me.

देवताओ के पूजने वाले उन्हीं देवताओं के लोक में जाते हैं और पुण्य समाप्त होने के पस्वात पुनः मृत्युलोक का चकर लगाते हैं । देवताओं कि अवधी भी ब्रह्मा के एक कल्प तक की होती है । उतनी ही बड़ी उन की रात्री भी होती है जब वे निद्रा में बिलीन हो जाते हैं । और ब्रह्मा की आयु एक सौ साल की होती है । अर्थात 360 X 100 = 36000 kapls of Lord Brahma. In other words Devtas are created at least 36000 times in Lord Brahma's life span. But a Bhakt who is liberated or gains salvation, goes to Lord Krishna's kingdom where he enjoys the bliss all the time.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अव्यक्तं व्यक्तिम् आपन्नं मन्यन्ते माम् अबुद्धयः ।
परं भावम् अजानन्तो ममाव्ययम् अनुत्तमम् ॥२४॥

अज्ञानी मनुष्य मुझ परब्रह्म परमात्मा के — मन, बुद्धि तथा वाणी से परे, परम अविनाशी — दिव्यरूप को नहीं जानने और समझने के कारण ऐसा मान लेते हैं कि मैं जनमने मरने वाला हूँ । (७.२४)

BG 7.24: The less intelligent think that I, the Supreme Lord Shree Krishna, was formless earlier and have now assumed this personality. They do not understand the imperishable exalted nature of My personal form.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको माम् अजम् अव्ययम् ॥२५॥

जो मूढ़ मनुष्य मुझ परब्रह्म परमात्मा के जन्मरहित, अविनाशी, दिव्यरूप को अच्छी तरह नहीं जान तथा समझ पाते हैं, उन सब के सामने — अपनी योगमाया से छिपा हुआ — मैं कभी प्रकट नहीं होता हूं. (७.२५).

BG 7.25: I am not manifest to everyone, being veiled by My divine *Yogmaya* energy. Hence, those without knowledge do not know that I am without birth and changeless.

अर्थात ऐसे मनुष्य बस संसार को अपना संसार समझते हुये इसी में रमते रहते हैं और ईश्वर को ढूँढने में असमर्थ होते हैं। ये नाशवान संसार ही उन के लिये सब कुछ है। जब तक इस संसारिक वस्तुओं में उन का मन रमा रहेगा, तब तक वे ईश्वर को नहीं देख सकते हैं। ईश्वर को देखने के लिये उन्हें संसार से नाता तोड़ कर भगवान् से नाता जोड़ना होगा। जब ऐसा हो जायेगा तब उन्हें भगवान् कण-कण में दिखाई देने लगेंगे। वे भगवान् की उपस्थिति हर एक जगह अनुभव करेंगे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥२६॥

हे अर्जुन, मैं भूत, वर्तमान और भविष्य के सब प्राणियों को जानता हूं, परन्तु मुझे कोई नहीं जानता. (७.२६).

BG 7.26: O Arjun, I know of past, present, and future, and I also know all living beings; but Me no one knows.

प्रश्नः- इस श्लोक में भी प्रश्न उठता है कि 'जब भगवान् जानते हैं कि किस की कैसी गति होगी, तो फिर मनुष्य को अपने उद्धार की स्वतन्त्रता कहाँ रही ?

उत्तरः- भगवान् किसी के कर्मों पर कोई पावन्दी नहीं लगाते हैं। कर्म करने के लिये मनुष्य स्वतन्त्र है और वह अपना भला यह बुरा स्वयं बना यह बिगाड़ सकता है। इसीलिये तो भगवान् ने (९- ३) में कहा है कि, मनुष्य अपने कुकर्मों के कारण मुझे ना प्राप्त करके अधोगति में चले गयें।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २७ -

इच्छाद्वेष समुत्थेन, द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि सम्मोहं, सर्गे यान्ति परन्तप ॥

हे भारतवंशी अर्जुन ! संसार में इच्छा और द्वेष से उत्पन्न सुख-दुखादि द्वन्द्वरूप मोह (भ्रम) से सम्पूर्ण प्राणी अत्यन्त अज्ञता को प्राप्त हो रहे हैं।

O descendant of Bharat, the **dualities of desire and aversion** (intense dislike) arise from **illusion** (i.e., false perception or belief). O conqueror of enemies, all living beings in the material realm are from birth deluded (mislead) by these. Plainly speaking, desire and aversion are the main course of temporary pleasure and everlasting pain and misery. They are also the prime path of destruction.

वशेष बात - इच्छा और द्वेष से द्वन्द्व मोह पैदा होता है जिस से मोहित होकर प्राणी भगवान् से बिलकुल विमुख हो जाते हैं, और बिमुख होने से बार-बार संसार में जन्म लेते हैं तथा जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि के चकर में रचे-पचे रहते हैं ।

Important Point - Delusion arises from desire and aversion, and it is because of this that Beings, having disinclination of GOD, follow the cycle of birth and death. This birth, death, old-age, illness-sickness, and other kinds of sufferings become part of their life.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २८ - **येषां त्वन्तगतं पापं, जनानां पुण्य कर्मणाम् ।**
ते द्वन्द्वमोह-निर्मुक्ता, भजन्ते मां दृढ व्रताः ॥

प्ररन्तु निष्कामभाव से श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करनेवाले जिन पुरुषों का पाप नष्ट हो गया है, वे राग-द्वेष जनित द्वन्द्वरूप मोह से मुक्त दृढ़निश्चयी भक्त मुझ को सब प्रकार से भजते हैं ।

वशेष बात - द्वन्द्व कई तरह का होता है, जैसे -

१. भगवान् में लगें यह संसार में लगें ? क्योंकि परलोक के लिये भगवान् का भजन अवश्यक है और इस लोक के लिये संसार का काम अवश्यक है ।
२. वैष्णव, शेव, शाक्त, गणपत और सौर - इन सम्प्रदायों में से किस सम्प्रदाय में चलें और किस सम्प्रदाय में न चलें ।
३. परमात्मा के स्वरूप के विषय में द्वेत, अद्वेत, विभिष्टाद्वेत, शुद्धाद्वेत, अविन्तिये भेदाभेद, आदि कई तरह के सिद्धान्त हैं । इन में से किस सिद्धान्त को स्वीकार करें और किस को नहीं ।
४. परमात्मा की प्रप्ति के भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, ध्यानयोग, मन्त्रयोग आदि कई माग्र है, उन में से किस माग्र पर चलें और किस पर न चलें ।
५. संसार में होनेवाले अनुकूल-प्रतिकूल, हर्ष-शोक, ठीक-बैठीक, सुख-दुख, राग-द्वेष आदि सभी द्वन्द्व हैं ।

ऊपर्युक्त सभी पारमार्थिक और संसारिक द्वन्द्वरूप मोह से मुक्त हुये मनुष्य दृढ़व्रती होकर भगवान् का भजन करते हैं । अगर मनुष्य का एक ही पारमार्थिक उद्देश्य हो जाये तो परमार्थिक और संसारिक सभी द्वन्द्व मिट जाते है ।

But persons, whose sins have been destroyed by engaging in **pious** (virtuous, devout, holy, and religious) activities, become free from the illusion of dualities. Such persons worship me with determination.

Important Point - The duality (pairs of opposites) can be of several kinds.

1. Whether they should be engaged in divine adoration for salvation, or in worldly affairs for welfare of this world.
2. Whether they should worship Lord Vishnu, Lord Shiv – the destroyer, Goddess Durga, God Ganesh or the Sun. Out of these five sects, which one should they follow?
3. Which of the following principles i.e., dualistic, non-dualistic, special non-dualistic, pure non-dualistic etc should they follow?
4. Which of the Disciplines-of devotion, knowledge (spiritual), action and meditation etc., should they follow?
5. There are pairs of opposites like favourable-unfavourable circumstances, pleasure and pain, attachment, and aversion etc.

A person of virtuous deeds, being free from all spiritual and mundane dualistic delusions, worships God with a firm resolve.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २९ - **जरा-मरण मोक्षाय, माम अश्रित्य यतन्ति ये ।**
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्न, मध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥

जो मेरे शरण होकर जरा और मरण से छूटने के लिये यत्न करते हैं, वे पुरुष उस ब्रह्म को, सम्पूर्ण अध्यातम को और सम्पूर्ण कर्मों को जानते हैं ।

Those who take shelter in me, striving for **deliverance** (liberation) from old-age and death, come to know *Brahm (the infinite)*, the individual self, and the entire field of karmic action.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ३० - **साधि भूताधिदैवं मां, साधियज्ञं च ये विदुः ।**
प्रयाण कालेऽपि च मां, ते विदुर्युक्त चेतसः ॥

जो पुरुष **अधिभूत** और **अधिदेव** के सहित तथा **अधियज्ञ** के सहित (सब का आत्मरूप) मुझे अन्तकाल में भी जानते हैं, वे युक्तचित वाले पुरुष मुझे जानते हैं अर्थात् मेरे को प्राप्त हो जाते हैं ।

Those who know me as the governing principle of the *adhibhūt* (field of matter) and the *adhidev* (the celestial gods), and as *adhiyajñ* (the Lord of all sacrificial performances), such enlightened souls are in full consciousness of me even at the time of death.

वशेष बात - जो संसार की भोगों और संग्रह की प्राप्ति-अप्राप्ति में समान रहनेवाले हैं तथा संसार से सर्वथा उपरत होकर भगवान् में लगे हुये हैं, वे लोग '**युक्तचेता**' हैं। ऐसे युक्तचेता मनुष्य अन्तकाल में भी मेरे को ही जानते हैं, अर्थात् अन्तकाल की पीड़ा आदि में भी वे अटल रूपसे स्थित रहते हैं। उनकी ऐसी दृढ़ सिथति होती है कि वे स्थूल और सुक्षम शरीर में कितनी ही हलचल होने पर भी कभी किञ्चितमात्र भी विचल्लित नहीं होते।

Important Point - Steadfast in mind are those who remain equanimous in gain and loss, in prosperity and pleasures, and in becoming indifferent to the world, and are engrossed in worship of God. Such people realise Him at the time of death i.e., remain established in Him, even in the pangs of Death (e.g., Heart Attack or severe pain), they do not lose control in the least, in spite of great turmoil, in their physical and subtle bodies.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सातवे अध्याये का सार

इस अध्याय में विज्ञानयोग या भक्तियोग का वर्णन है। इस अध्याय का अनुशीलन करने से इस विषय की दृढ़ उपलब्धि होती है की भगवान् ही परतत्त्व की चरमसीमा हैं। उन के अतिरिक्त और कोई भी परतत्त्व है ही नहीं। उन के श्रीचरण कमलों में ऐकान्तिक रूप से शरणागत हुए बिना माया जाल से छुटकारा पाने का और कोई उपाय नहीं है।

इस जगत में भगवद्भजन सुदुर्लधभ है। अन्य देव-देवियोंकी अराधना से कुछ क्षणों के संसारिक सुख, आराम आदि तो मिल जायेंगे परन्तु यह सब-के-सब अनित्य, नाशवान तथा क्षणभंगुर हैं। परम सुख और शान्ति और नित्य कल्याण तो केवल भगवद्भजन और भगवदार्पित कर्मों से ही मिल सकता है। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् स्वयं अर्जुन से कहे हैं।

मूढ़, नराधम, असुरभावपन्न व्यक्ति भगवद्भजन नहीं करते। पर चार प्रकार के सुकृति-सम्पन्न व्यक्ति भगवद्भजन करते हैं। इन चार प्रकार के व्यक्तियों में पहले तीन अर्थात "आर्थ", "आर्थार्थी"और "जिज्ञासु" सकामी होने के कारण मुझे नहीं प्राप्त कर पाते हैं। सकामभाव होने के कारण उन में इच्छायें और कामनायें की आकांनक्षा रहती है। एक ज्ञानी भक्त ही है जो मुझ को सर्वस्व मान कर सब में मुझ को ही देखता है, सब कुछ मेरे लिये ही करता है और सब कुछ मुझे ही अर्पन कर देता है। वही सर्वश्रेष्ठ और मेरा अन्नय प्रेमी तथा मुझे प्राणों के समान प्रिये है।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

Gita Essence in English – Chapter 7

Bhaktiyog and Vigyanyog have been described in this chapter. By following this chapter, one gets the solid understanding of the fact that God is the pinnacle of existence. Apart from God there is no other element or superior power. There is no other way to escape from the trap of illusion without surrendering yourself to his Lotus feet.

Bhagwat bhajan with pure conscience and devotion is very rare in this world. By worshipping other Gods and Goddesses, one will get the worldly pleasures and comforts of happy times, but all these are temporary and perishable. Ultimate happiness, peace and daily wellbeing can be achieved only by worshiping God and doing deeds dedicated to God. This has been pronounced to Arjun by Shree Krishna Bhagwan himself.

Silly, foolish, vile and those possessing demonic qualities, do not engage themselves in prayers and do not worship God. But four types of blessed and prosperous people worship God, and they are: Sickly, material oriented, inquisitive, and knowledgeable. These four go directly to God rather than anyone else for their needs.

Because of being selfish or looking for personal gain only, the first three cannot attain me. However, the knowledgeable being a selfless person, easily attains me because he considers me as the absolute truth, resides in me and offers everything to me only. He is the supreme and exclusive lover and is as dear to me as my life.

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवतगीतासूपरिष्त्सु ब्रह्मविद्यां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्याय ॥७॥